पढ़ना है समझना

गेहूँ

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930
पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931
© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008
PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, गौतम चौधरी; अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुज़हत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

गेहूँ

जमाल

मम्मी

पापा

एक दिन जमाल की मम्मी ने गेहूँ धोए।
गेहूँ खूब सारे थे।
गेहूँ पानी में धुलकर खूब चमक रहे थे।
जमाल ने मम्मी के साथ गेहूँ धुलवाए।

मम्मी ने गेहूँ आँगन में सुखा दिए।
उन्होंने जमीन पर दो चादरें बिछाईं।
दोनों चादरों पर गेहूँ फैला दिए।
जमाल ने भी मम्मी के साथ गेहूँ फैलवाए।

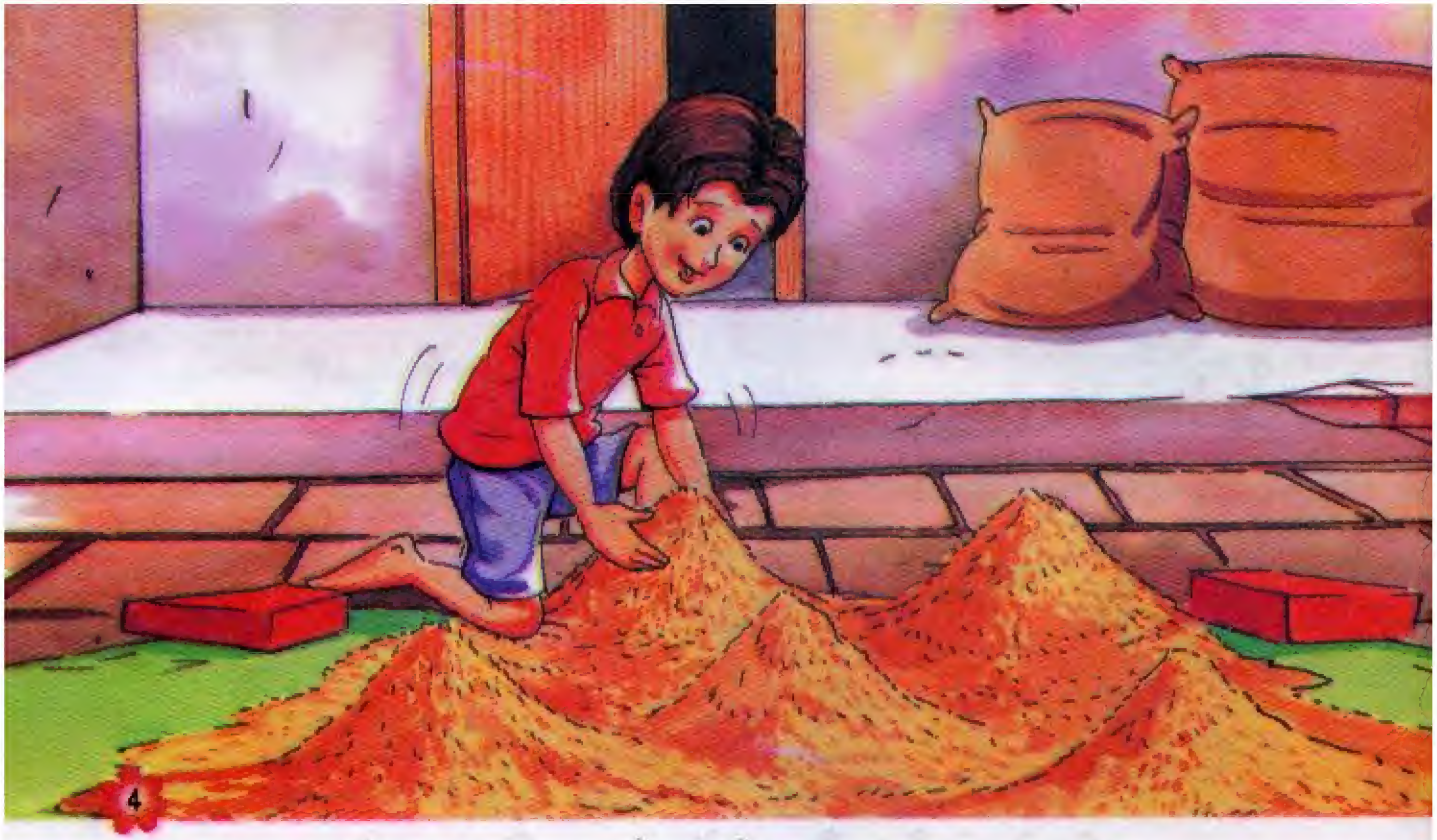

मम्मी थककर सो गईं।
जमाल के तो मज़े आ गए।
उसने गीले गेहूँ के दानों से पहाड़ बनाए।
एक चादर पर गेहूँ के पाँच पहाड़ बने।

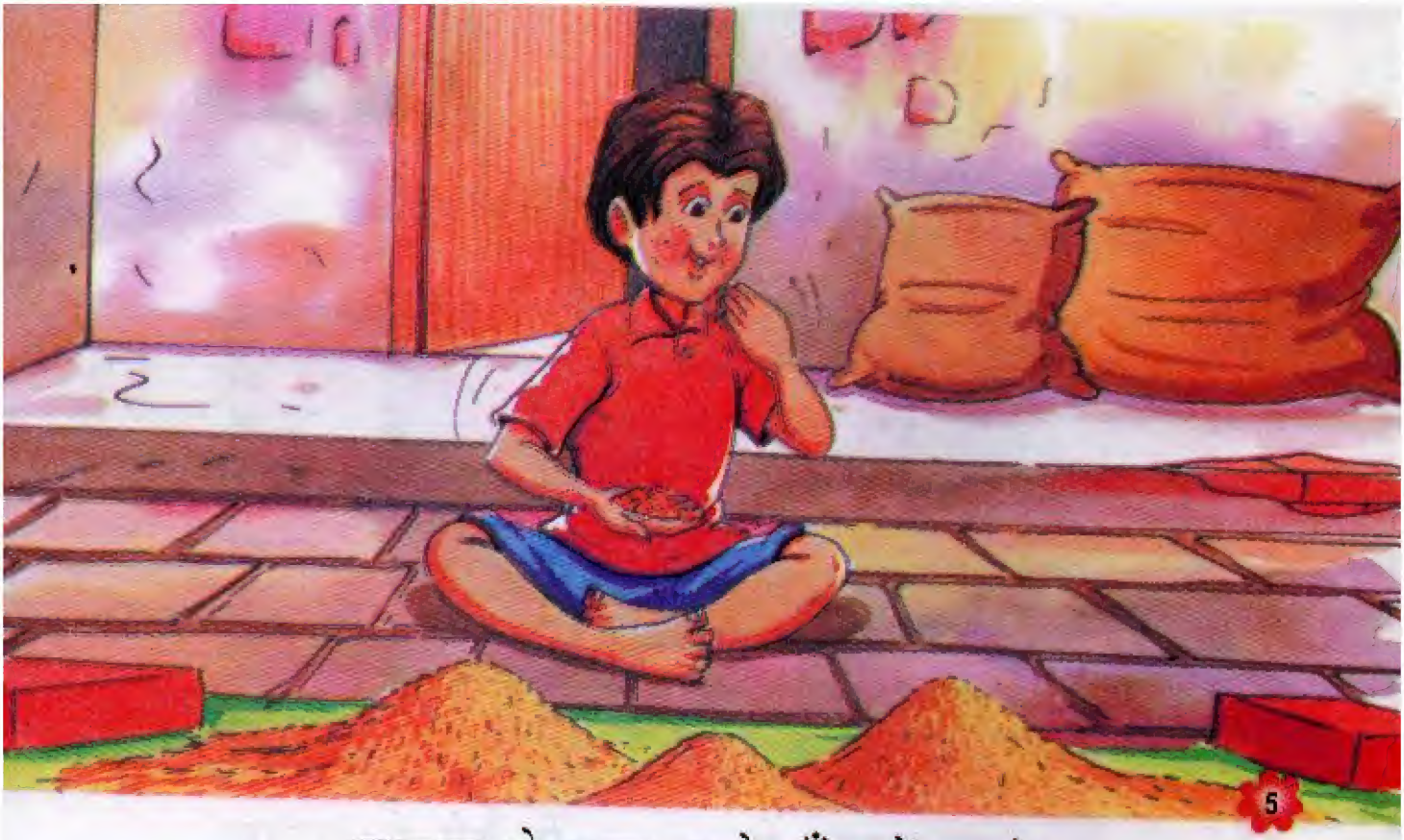

जमाल ने कुछ दाने मुँह में डाले।
उसने गेहूँ के गीले दाने चबाए।
खूब चबाए।
खूब चबाए।

जमाल बिजूका भी बना।
वह दोनों हाथ फैलाकर खड़ा हो गया।
तीन चिड़ियाँ गेहूँ के दाने खाने के लिए आईं।
जमाल ने चिड़ियों को देखा पर भगाया नहीं।

जमाल ने गेहूँ में से अपना नाम भी लिखा।
उसने पहले अपना नाम हिंदी में लिखा।
फिर जमाल ने अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखा।
उसने अपने मम्मी-पापा का नाम भी लिखा।

जमाल ने गेहूँ के कुछ दाने हथेलियों में रगड़े।
खूब रगड़े।
खूब रगड़े।
उसकी हथेलियाँ लाल हो गईं।

जमाल थक कर वहीं लेट गया।
वह लेटकर भी गेहूँ पर उँगली फेरता रहा।
जमाल को गेहूँ में उँगली फेरते-फेरते नींद आ गई।
वह सो गया।

मम्मी ने जमाल को गोद में उठाया।
उसे ले जाकर बिस्तर पर सुला दिया।
जमाल गहरी नींद में था।
वह सोता ही रहा।

जमाल की आँख खुली तो वह बिस्तर पर था।
उसने उठ कर आस-पास गेहूँ ढूँढ़े।
जमाल तो कमरे के अंदर था।
गेहूँ आँगन में थे।

जमाल भागकर आँगन में गया।
वह गेहूँ ढूँढ़ने लगा।
पर गेहूँ तो वहाँ थे ही नहीं।
दोनों चादरें भी गायब थीं।

जमाल मम्मी के पास गया।
मम्मी गेहूँ बीन रही थीं।
पापा भी गेहूँ बीन रहे थे।
जमाल फिर गेहूँ से खेलने लगा।

मम्मी-पापा ने गेहूँ एक कनस्तर में भरे।
पापा ने कनस्तर पकड़ा।
मम्मी ने उसमें गेहूँ डाले।
जमाल ने भी कनस्तर में गेहूँ डलवाए।

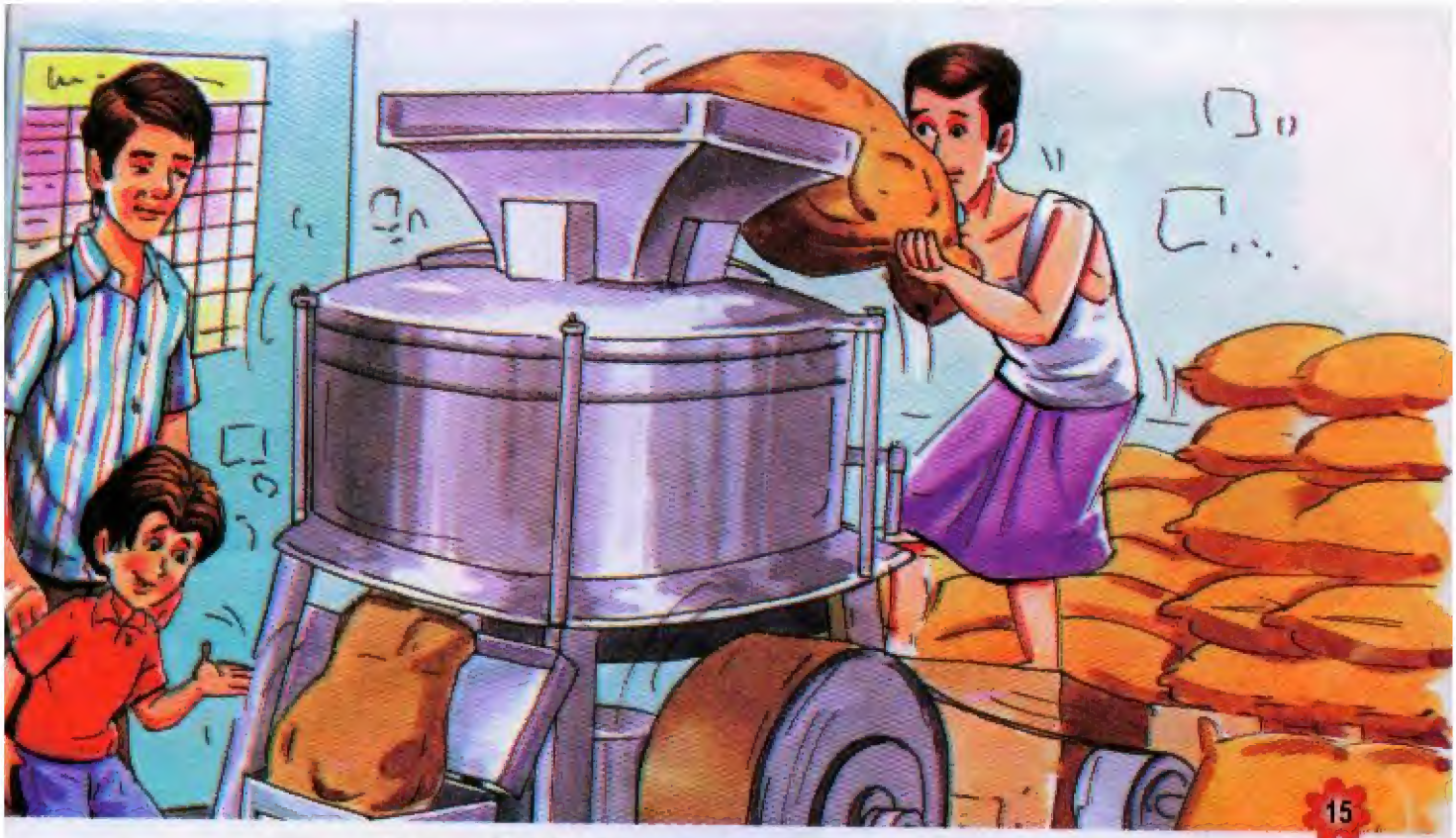

पापा फिर गेहूँ पिसवाने गए।
जमाल भी उनके साथ गया।
उसने आटे की चक्की चलते हुए देखी।
जमाल को आटे की खुशबू बहुत अच्छी लगी।

जमाल और पापा आटा लेकर घर लौटे।
उन्होंने आटे का कनस्तर रसोई में रखा।
मम्मी ने ताजा-ताजा आटा गूँधा और रोटियाँ सेंकीं।
जमाल ने गरम-गरम रोटियाँ खाईं।

स्तर 1

स्तर 2

स्तर 3

स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

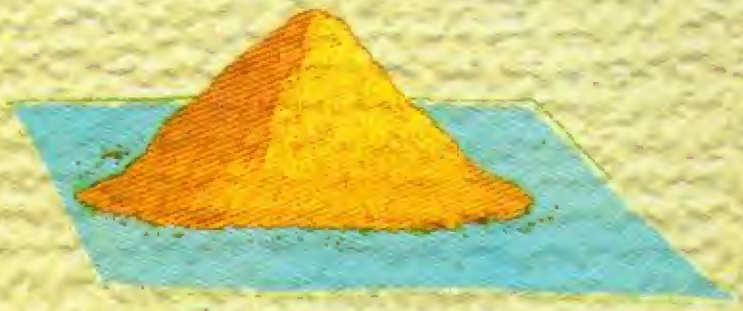

2095

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING